International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 10-11-2021, Accepted: 26-11-2021, Published: 11-12-2021
Volume 7; Issue 6; 2021; Page No. 68-70

पंडित दीनदयाल उपाध्याय का व्यक्तित्व, कृतित्व एवं उसकी राजनीति

मोनिका रानी[1], डॉ. नविनता रानी[2]

[1] शोधार्थी, शिक्षा विभाग, हिमालयन गढ़वाल विश्वविद्यालय, धैड गाँव, शिव नगर, पोखरा, पौड़ी गढ़वाल, उत्तराखण्ड, भारत

[2] प्रोफेसर, शिक्षा विभाग, हिमालयन गढ़वाल विश्वविद्यालय, धैड गाँव, शिव नगर, पोखरा, पौड़ी गढ़वाल, उत्तराखण्ड, भारत

सारांश

सोना आग की तपिश में कुंदन बनता है अर्थात् तपकर ही उस आकृति में ढलता है जिसे धारण करने से धारण करने वाले की शख्सियत में चार चांद लग जाते हैं। लेकिन सोने को धारण करने योग्य जितने भी श्रेष्ठ पुरुष हुए हैं, वे भी आसानी से महादीर्घ नहीं हुए हैं और ना ही ऐसे बने हैं कि लोग उनके प्रतिमानों को स्वअस्तित्व में धारण करें। उन्होंने अपने प्राण को जिंदगी की भाठी में गति दी। तब वे महान व्यक्ति कहलाए अर्थात् वृहत बलिदान करके महान बना जाता है और उदारता कोई ऐसी वस्तु नहीं है जिसका बाजार में क्रय–विक्रय हो सके और उदार बना जाए। इन्हीं महान व्यक्तियों की श्रृंखला में एक महान पुरुष थे "पं० दीनदयाल उपाध्याय"

मूलशब्द: दीनदयाल उपाध्याय, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, राजनीति

प्रस्तावना

पं० दीनदयाल उपाध्याय एक भारतीय विचारक, समाजशास्त्री, अर्थशास्त्री, पत्रकार और इतिहासकार थे। पं० दीनदयाल उपाध्याय जी का राजनीतिक जीवन उप्सर्ग, कीर्ति, प्रतिष्ठा और गौरव का जीवन रहा है। जिसमें अभिलाषा अत्यल्प भी प्रदर्शित नहीं होती है अर्थात् पं०दीनदयाल जी को उच्च स्थान पाने की कोई आकांक्षा नहीं थी। पं० दीनदयाल ने राष्ट्र के विकास की अनिवार्यताओं के कारण राजनीति को अपनाया था और उनके जीवनपर्यंत संगठन के मूल्य भी उचित व लोक कल्याण हेतु सही रहे।

महान देशभक्त विचारक पं० दीनदयाल उपाध्याय का जन्म 25 सितंबर 1916 को मथुरा जिले के नंगला चंद्रभान गांव में हुआ था। आपके पिता श्री भगवती प्रसाद रेल संविभाग में जलेसर पथ के स्टेशन पर स्टेशन मास्टर के पद पर आसीन थे। माता का नाम रामप्यारी था, जो पुण्यात्मा प्रवृत्ति की स्त्री थी। दीनदयाल जब मात्र ढाई वर्ष के थे तभी आपके पिता का देहांत हो गया। दीनदयाल का लालन–पालन उनके ननसार (ननिहाल) में हुआ। दीनदयाल ने प्रारंभिक शिक्षा प्राप्त करने के बाद गंगापुर में दसवीं, कोटा राजस्थान से सातवीं, रामगढ़ से आठवीं, नौवीं कक्षा कल्याण हाई स्कूल सीकर जिले से परीक्षाएं उत्तीर्ण की। दसवीं कक्षा में गणित विषय में विशिष्ट दक्षता के साथ ही प्रदेश में प्रथम स्थान प्राप्त किया। जिसके फलस्वरूप उन्हें विद्यालय एवं बोर्ड से दो स्वर्ण पदक भी प्राप्त हुए।

उद्देश्य

- समाजशास्त्री और राजनीतिज्ञ के रूप में राष्ट्र के लिए किए गए कार्यों का विवेचन।
- जनसंघ के माध्यम से राष्ट्र की समस्याओं का समाधान करने योग्य सुझावों व प्रयासों का विवेचन।

परिकल्पनाएं

- केवल सत्ता प्राप्ति के लिए दलबदल करना देश और समाज के हित में कितना उचित या अनुचित, तर्कों के आधार पर विस्तृत विवरण।
- इसमें समाज के राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक प्रबोधन की व्याख्याओं पर प्रासंगिक अनुमानों का विस्तार पूर्वक विवरण।
- अखंड भारत की समस्याओं को दूर करने के लिए स्वस्थ चिंतन एवं तुलनात्मक अध्ययन पर आधारित समाज के लिए अति उपयोगी योजनाओं की क्रमबद्धता को कार्यरूप में परिणत करने वाले प्रयासों को प्राथमिकता देते हुए क्रियान्वयन पर बल देने का विस्तार पूर्वक विवरण किया गया।

पं० दीनदयाल का व्यक्तित्व

पं० दीनदयाल उपाध्याय का अंतःकरण पूर्णतया एकात्मकता के भाव से ओत–प्रोत था। इसलिए शून्यता वाले क्षेत्रों में अपरूप को अर्पित करने में वह बाल्यावस्था से ही सलंगन थे। पं० दीनदयाल को छात्र जीवन में वृहत सेवाव्रती की अनेक समीपताएं उन्हें प्राप्त हुई, साथ ही राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के संस्थापक डॉ० केशवराम बलिराम हेडगेवार की आसन्नता भी उन्हें प्राप्त हुई। उन्होंने अपना तन–मन–धन पूरी तरह से देश को प्रदत्त किया। पंडित जी घर गृहस्थी की तुलना में देश की सेवा को अधिक उच्च मानते थे। पत्रकारिता जीवन के दौरान उनके द्वारा लिखे गए शब्द आज भी लाभप्रद हैं। आरंभ में समकालिक विषयों पर 'पॉलिटिकल डायरी' नामक स्तंभ लिखा करते थे। पंडित जी के राजनैतिक लेखन को भी दीर्घकालीन विषयों से जोड़कर उद्भावना (रचना) कार्य को सदा के लिए लाभकर बनाया है।

उनके प्रणयन का एकमात्र लक्ष्य पुनःप्रतिष्ठा और विश्वजीत था। पंडित जी की अनेक विकासशील रचनाओं का काफी लंबे समय तक पत्र–पत्रिकाओं में प्रकाशित किया गया । जिसमें लखनऊ से विज्ञापित 'राष्ट्रधर्म' व दिल्ली से प्रकाशित 'पांचजन्य' पत्र प्रमुख हैं। पंडित जी एक ऐसे महान दृढ़ व्यक्ति थे जिन्होंने समय–समय पर आवश्यकता अनुसार पत्र–पत्रिकाओं में सामग्रियों के संयोजन का कार्य रात दिन एक कर के बहुत मेहनत से कार्य पूर्ण किया। पंडित जी ने अपने प्रपत्रों व प्रवचनों में राजनीति में सतर्कता पर भी सामर्थ्य प्रदान किया। लोक मनुजता के भारत की पावन धरा के सहस्त्रों मनीषियों के आत्मज्ञान का सार तत्व एकात्म मानव दर्शन के रूप में पहुंचाने वाले पं० दीनदयाल उपाध्याय पर अमानवीय आघात हुआ और 11 फरवरी 1968 की रात अनन्य प्रकाश में एकाकार हो गया। उनका मृत शरीर मुगलसराय रेलवे स्टेशन से प्राप्त हुआ था।

पं० दीनदयाल का कृतित्व एवं राजनीति में पदार्पण

पं० दीनदयाल जी ने देश के विभिन्न आयामों में विकास हेतु और अपरिहार्यतावश राजनीति को अपनाया। पं० दीनदयाल उपाध्याय भारत का सम्मान थे । उन्होंने भारतीयों के भ्रमित जीवन में नए जीवन का संवाद–संवहन किया।

पं० दीनदयाल उपाध्याय केवल राजनीतिक उपदेष्य नहीं थे। वर्तमान समय में उनके जीवन से ही राजनीतिक समूहों के समाज सेवकों को सीख लेनी चाहिए। उनका स्वयं का जीवन प्रेरणाप्रद, नियमबद्ध तथा बेदाग था। राजनीति तो उनके लिए देश की सेवा करने के लिए जैसे संसाधन मात्र थी, केवल शासन सुख के लिए नहीं थी।

- दीनदयाल उपाध्याय राजनीति में क्यों आए? इस प्रश्न का उत्तर है, उन्होंने राष्ट्र की नीतियों में विकास के लिए राजनीति में शुभागमन किया।
- देश की सत्ता चाहते तो थे किंतु किसके हाथों में? उनका विचार था कि सत्ता उसके हाथों में जानी चाहिए, जो राजनीति का उपयोग विकसित राष्ट्र नीति के लिए कर सके।

दीनदयाल उपाध्याय जी के समय में उनके संगीसाथी और प्रत्येक मनुष्य के मन में एक प्रगतिशील भारत के स्वप्नों को साकार करने वाली अनेक भावनाओं की अभिव्यक्ति और विचारों की लहरें अभिलाषाओं के रूप में विराजमान थी साथ ही कुछ कर गुजरने की पुरजोर महत्वकांक्षाएं भी अपने पूरे जोश पर थी। जिसके लिए द्वंद्व द्वारा नहीं बल्कि एकमत और जीवन लक्ष्य जो केवल राष्ट्रहित में लोक कल्याण हेतु लक्ष्यों को प्राप्त करने योग्य दया भावना से प्रेरित होकर शत्रुता पर विजय पाकर विकसित किए गए थे। प्रतिरूप मानव मूल्यों की स्थापना के भाव से इसका श्रेय पं० दीनदयाल उपाध्याय को दिया गया है। श्री श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने 21 अक्टूबर 1951 को दिल्ली में भारतीय जनसंघ का प्रतिपादन किया और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का समर्थन भी इनके दल को मिला। 1951 में पं० दीनदयाल उपाध्याय को राजनीति में लाने का श्रेय तत्साम्यिक सरसंघ संचालक श्री पं० पूज्य माधवराव सदाशिवराव गोलवलकर गुरुजी को दिया गया। डॉ० श्यामा प्रसाद मुखर्जी जैसे राष्ट्रभक्त नेता अपने दृष्टिकोण और कृत्य के प्रति निश्चल रहे हैं। 1952 में डॉ० श्यामा प्रसाद मुखर्जी से प्रभावित होकर उन्हें अखिल भारतीय विषयक जनसंघ का मंत्री निर्धारित किया गया।

डॉ० श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने कहा था, "अगर मुझे दो दीनदयाल मिल जाते तो मैं पूरे भारत का नक्शा बदल दूं।"

दीनदयाल उपाध्याय जी लखीमपुर जिले में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रचारक के रूप में कृत्य करने लगे थे। उनकी समर्थता और दृढ़ता के कारण उन्हें 1945 में उत्तर प्रदेश के सहप्रचारक का कार्य दिया गया और 1951 तक उन्होंने तत्साम्यिक उत्तर प्रदेश प्रचारकों के कार्य को कृतकार्यता किया जो भाऊराव देवरस से प्रोत्साहित भी थे। अपने मानकों को मूर्त करने प्रयोजन से उन्होंने लखनऊ में राष्ट्रधर्म प्रकाशन नामक एक संस्था का प्रतिपादन किया और अपने चिंतन को प्रचारित करने के लिए 'राष्ट्रधर्म' प्रतिमास, 'पांचजन्य' अर्द्धपाक्षिक और बाद में 'स्वदेश' प्रतिदिन लांच किया। स्वदेश की पत्रिका अभी भी लखनऊ में 'नवोदित भारत' के रूप में मुद्रित हो रही है।

उनके कार्य करने की विधि को देखकर सभी लोग स्तंभित थे। उनकी उपासना लोगों के लिए उत्तेजना का मूल स्रोत थी। आज भी उनके द्वारा चलाए जा रहे विज्ञापित सुचारू रूप से चल रहे हैं। महात्मा गांधी के कत्ल के बाद ही संघ पर प्रतिषेध लगा दिया गया था। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का उस हिंसा से को लेना–देना नहीं था। पं० दीनदयाल उपाध्याय ने उस अत्याचार के विरुद्ध आवाज उठाई और पांडे ने सत्याग्रह आंदोलन की कामयाबी का संचालन किया। अपने अधिकारों के माध्यम से जनता सही जगह का पता लगा सकती है। सरकार ने उनके द्वारा विज्ञापित शंखनाद राष्ट्रभक्त के माध्यम से गूंजती रही और आज वर्तमान समय में भी पं० दीनदयाल उपाध्याय का व्यक्तित्व अखंडता की ओर धाराप्रवाहित रूप में बढ़ता जा रहा है।

राजनीतिक दल 'जनसंघ' में प्रवेश

बहुमुखी सर्जनशक्ति वाले पं० दीनदयाल उपाध्याय न केवल एक राजनीतिज्ञ थे बल्कि इससे भी बढ़कर विचारक, रहस्यवादी, कुशल लोग, आयोजक, समाज सुधारक, राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक विचारक थे। पं० दीनदयाल किसी को संकेत देने से पहले मनन करते थे। राष्ट्रीय राज्य के बारे में उनके विचार आज भी अधिक उपयोगी हो गए हैं। वर्ष 1939 में जब एम० ए०. करने के लिए वह आगरा आए तो उन्होंने संगठन के प्रति अपना उत्तरदायित्व पूर्ण रूप से निभाया और आगरा के राजा की मंडी नामक स्थान पर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की एक शाखा को स्थापित किया। पं० दीनदयाल उपाध्याय स्वतंत्रता के साथ कई मुसीबतों का हल कराना चाहते थे। जब भारत आजाद हुआ तो भारत को अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ा । उनकी प्रवृत्ति क्या थी, उसका आविर्भाव कहां से था। इन सभी समस्याओं के निराकरण के लिए पं० दीनदयाल उपाध्याय ने जनसंघ के माध्यम से अनेक परामर्श दिए थे।

जब भारत स्वतंत्र हो गया था और कांग्रेस एक शक्तिशाली राजनीतिक दल बन कर काम कर रहा था, पर आजाद भारत में किस दृष्टिकोण को आगे बढ़ाना है और क्या ध्येय लेकर भारत को किस तरह की परिस्थितियों को तय करना था। इसकी कमी स्पष्ट तौर पर चमक रही थी पर कांग्रेस का कोई अच्छा और सशक्त पर्याय भी नहीं दिख रहा था। कांग्रेस में कुछ नेता ऐसे भी थे जो भारत की दशा को भलीभांति समझते थे और राष्ट्रहित में कार्य कर रहे थे। जो अपने निजी स्वार्थों को भी साथ लेकर चल रहे थे। राष्ट्र के सुधार और उत्कर्ष को एक तरफ रख कर अपनी प्रभुता दिखा रहे थे। कांग्रेस में राजनीतिक सुअवसर पर उपाध्याय का एक व्याख्यान प्रसिद्ध है

"कांग्रेस जो कहती है, करती है, उस में जमीन आसमान का अंतर रहता है। यह राष्ट्रवाद की कसम खाती है, लेकिन सांप्रदायिकता को गले लगाती हैं। यह कहना गलत नहीं होगा कि सांप्रदायिकता को कांग्रेस का ही सहारा है। आप कांग्रेस सबसे घटिया दर्जे के सांप्रदायिक मुस्लिम लीग को देख सकते हैं। केरल में कांग्रेस पार्टी को 'कैथोलिक कांग्रेस' के नाम से जाना जाता है। हमें आश्चर्य नहीं होना चाहिए यदि पंजाब में सफेद टोपी के बजाय नीली टोपी पहन के चुनाव जीतने के लिए है सब कुछ और कुछ भी कर सकती है।

दीनदयाल का राजनीतिक दृष्टिकोण

आजादी के बाद दीनदयाल पहले ऐसे राजनीतिक विचारक दिखाई देते हैं जो भारतीय मतदाता को, राजनीतिक गुटों को तथा राजनीति में काम कर रहे नेतृत्व को विस्तृत रूप से प्रशिक्षित करने का उत्तरदायित्व अपने ऊपर लेते हैं। उनका मत था कि प्रभुत्व उसके हाथों में जाना चाहिए जो राजनीति का उपादेय राष्ट्रनीति के लिए तैयार कर सके।

भारत की अविच्छेदता और एकत्ववाद

दीनदयाल उपाध्याय के अनुसार

"अखंड भारत देश की भौगोलिक एक्य का ही सूचक नहीं है अपितु तो जीवन के भारतीय दृष्टिकोण का प्रतीक है जो बहुसंख्य में एकता का निरीक्षण करता है।"

भारत आवंटन के लिए उपाध्याय अपनी पुस्तिका में मुस्लिम पार्थक्य की नीति, अंग्रेजों की फूट डालो व राज करो, की नीति

कांग्रेस की राष्ट्रप्रेम की विरूपित धारणा में तुष्टिकरण की नीति को जवाब देह मानते हैं।

निराकरण की दृष्टि से अपनी पुस्तिका के अंत में उपाध्याय कहते हैं कि वास्तव में भारत को अखंड करने का मार्ग युद्ध नहीं है । संग्राम से भोगोलिक एकता हो सकती है, राष्ट्रीय एकता नहीं। अविच्छिन्नता भोगोलिय ही नहीं राष्ट्रीय आदर्श भी है। देश का पृथक्करण दो राष्ट्रों के सिद्धांत तथा उसके साथ समझौते की निष्ठा से हुआ। अखंड भारत एक देश के सिद्धांत पर मन कर्म एवं वचन से डटे रहने पर सिद्ध होगा।

कश्मीर जनक्षोभ

दीनदयाल ने एक मुखिया एक कानून, एक चिह्न पर अधिक जोर दिया।

भारतीय जनसंघ शुरू द्वारा चलाए जा रहे कश्मीर अभियान के प्रसिद्ध तीन नारे थे।

- एक राष्ट्र में दो कानून व्यवस्था नहीं चलेंगी।
- एक देश में दो मुखिया नहीं चलेंगे।
- एक देश में दो प्रणाली नहीं चलेगी।

दीनदयाल उपाध्याय भी अपने एक प्रपत्र में लिखते हैं आज कश्मीर कषपट्टिका बन गया है। भारत की धर्मनिरपेक्षता, राष्ट्रीयता की नेशनल कांग्रेस के नेताओं की देश प्रवृत्ति की ओर संयुक्त राष्ट्र संघ की न्यायशीलता की। जिस कश्मीर के लिए भारतीय जन संघ के प्रथम अध्यक्ष श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने अपने जीवन का बलिदान कर दिया। उपाध्याय जीवनपर्यंत कश्मीर के विकास लिए अभियान चलाते रहे। आज उसी भारतीय जनता पार्टी की सरकार पूरे भारत में है।

"राष्ट्रीय विपदा के क्षण में देशहित सर्वश्रेष्ठ"

राजनीति उनके लिए संसाधन थी, कुछ प्रमाणित करने का मार्ग नहीं। यह सेवापथ था, मंजिल नहीं। वह राजनीति का आध्यात्मिकरण चाहते थे। वे भारत के दीप्त अतीत से प्रोत्साहन लेते थे तथा कांतिमुक्त भविष्य का निर्माण करना चाहते थे। उनकी आस्थाएं सदियों पुराने अविनश्वर राष्ट्र जीवन की नींव से रस को अंगीकार करते हुए, किंतु वे रूढ़िवादी नहीं हुए थे।

उन्हें कभी किसी पद ने विमुग्ध नहीं किया। वे संसद सदस्य नहीं थे लेकिन संसद सदस्यों के निर्माता थे। उन्होंने कभी रूपिम नहीं चाहा बड़ी कठिनाई से उन्हें अध्यक्ष मर्षिम का भार संभालने के लिए तैयार किया गया था। उन्होंने प्रोत्साहन दिया कि चलो विंध्याचल के पार कन्याकुमारी पर, जहां भारत माता के पगो को सिंधु धो हो रहा है। भारत की अभिन्नता का रतजगा फूंके। उनके नेतृत्व में हमने आसेतु हिमालय भारत की पूर्णत्व को गुंजाने की प्रतिज्ञा ली। कालीकट अधिवेशन हुआ हम वहां गए उनकी अध्यक्षता में अधिवेशन कृतार्थ हुआ। लोगों ने कहा कि जनसंघ में कृतकार्यता का ऐतिहासिक चित्र प्रस्तुत किया।

जनसंघ राष्ट्र नीति का उदाहरण हम देख सकते हैं जब चीन द्वारा भारत पर प्रहार किया गया, उस समय भारतीय जनसंघ का उत्तर प्रदेश में किसान जन आंदोलन चला हुआ था। दीनदयाल उपाध्याय की राजनीति चाल बहुत सीधी थी, टेढी नहीं। राष्ट्रीय विपदा के क्षण में भी सरकार को कठिनाई में डालकर अपने दल के स्वार्थ परायणता उनकी राजनीति में नहीं बैठता था। इसलिए इस संकट की घड़ी में तुरंत अपने किसान अभियान को बिना प्रतिबंध अवरोधित कर दिया गया।

वर्तमान समय में भाजपा सरकार के द्वारा नागरिकता अन्वेषण बिल को पास कर एक्ट बना दिया गया है, जिसके तहत अब इस्लामिक देश पाकिस्तान, बांग्लादेश, अफगानिस्तान में रह रहे अल्पसंख्यकों को एक विशिष्ट ढंग के तहत भारत की नागरिकता प्रदान करने का उपबंध किया गया है।

दीनदयाल उपाध्याय ऐसे राजनीतिक नेता थे, जो कि राष्ट्रीय विपदा के समय सभी राजनीतिक दलों के एकत्व दिखाने के लिए निवेदन करते रहे।

श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने कहा था कि, "अगर मुझे दो दीनदयाल मिल जाएं तो मैं भारतीय राजनीति का नक्शा ही बदल दूं।"

यहीं से हम कह सकते हैं कि दीनदयाल उपाध्याय का आचरण कितना मजबूत था। उनके इसी गंभीर अध्यवसाय के फलतः राजनीतिक मंजर में उनका स्थान बना है, और सदा बना रहेगा। नवीन भारतीय राजनीतिक दर्शन को पंडित दीनदयाल उपाध्याय का विशेष सहयोग प्रदान है।

शोध प्रविधियां

- इसमें ऐतिहासिक विधि में प्रयुक्त प्रायोगिक अभिकल्व की व्याख्या की गई है।
- इसके अंतर्गत साक्षात्कार व अवलोकन विधि का प्रतिनिधित्व किया गया है।

संदर्भ सूची

1. उपाध्याय, दीनदयाल दीनदयाल उपाध्याय, संपूर्ण वांग्मय (15 खंड), प्रभात प्रकाशन, दिल्ली (2016)
2. सिंह, अमरजीत," मैं दीनदयाल बोल रहा हूं" प्रभात प्रकाशन, दिल्ली (2018)
3. दीनदयाल उपाध्याय राष्ट्र चिंतन (6), अखंड भारत साध्य और साधन राष्ट्र धर्म पुस्तक प्रकाशन लखनऊ (पृ ० 33)
4. भारतीय राजनीति को पंडित दीनदयाल उपाध्याय का योगदान (अध्याय 3), पंडित दीनदयाल जी का राजनीतिक चिंतन, डॉ० ईला त्रिपाठी, डॉ० प्रयाग नारायण त्रिपाठी, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत
5. दीनदयाल पांचजन्य कश्मीर अंक (दीपावली 2019), 28 अक्टूबर 1962 (पृ ० 167)
6. पंडित दीनदयाल उपाध्याय, राजनीतिक चिंतन
7. पंडित दीनदयाल उपाध्यायरू कर्तव्य एवं विचार, डॉक्टर महेश चंद्र शर्मा (2018)
8. भारतीय जनता पार्टी की गौरव गाथा शांतनु गुप्ता (2020)

vermaupendra79@gmail-com